d{kk & 5

fVIi.kh

13

fo".k|lglzukeLrks=&II

प्रिय शिक्षार्थी पिछले पाठ में आपने विष्णुसहस्रनामस्तोत्र में दिये गये विष्णु से संबंधित श्लोकों को पढ़ा हैं इस पाठ में आप विष्णु की प्रशंसा में दिये गये श्लोकों का उच्चारण तथा अर्थ–ज्ञान कर पायेंगे।

mís';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्लोकों का शुद्ध रूप में उच्चारण कर पाने में; और
- इसपाठ में दिये श्लोकों का अर्थज्ञान कर पानें में ।

13.1 fo".k lg luke Lrk= & II

fVIi.kh

iloU;kl%A

JhonO;kl mokp &&&

ऊँ अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य ।

श्री वेदव्यासो भगवान् ऋषिः ।

purvanyasaḥ|

śrīvedavyasa uvāca ---

Om̃ asya śrīviṣṇordivyasahasranāmastramahāmantrasya|

śrī vedavyāso bhagavān ṛṣiḥ|

vu"Vi NUn% A

श्रीमहाविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता ।

अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम् ।

देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः ।

उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः ।

शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम् ।

शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम् ।

रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति नेत्रम् ।

त्रिसामा सामगः सामेति कवचम् ।

आनन्दं परब्रह्मेति योनिः।

ऋतुः सुदर्शनः काल इति दिग्बन्धः ।।

anuṣṭup chandaḥ।

śrīkṛṣṇaḥ paramātmā śrīman nārāyaṇo devatā

amṛtāṃ śudbhavo bhānuriti bījam

devakīnandanaḥ sraṣṭeti śaktiḥ

udbhavaḥ kṣobhaṇo deva iti paramo mantraḥ

śaṅkhabhṛn nandakī cakrīti kīlakam

śārṅgadhanvā gadādhara ityastram

rathāṅgapāṇir akṣobhya iti netram

trisāmā sāmagaḥ sāmeti kavacam

ānandaṃ parabrahmeti yoniḥ

ṛtu sudarśanaḥ kāla iti digbandhaḥ ||

श्रीविश्वरूप इति ध्यानम् ।

श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थे सहस्रनामस्तोत्रपाठे विनियोगः ।।

Śrī viśvarūpa iti dhyānam

śrīman nārāyāṇa kaiṅkarya rūpaṃ jape viniyogaḥ ||

vFk U;kl% A

ॐ शिरसि वेदव्यासऋषये नमः ।

मुखे अनुष्टुप्छन्दसे नमः ।

हृदि श्रीकृष्णपरमात्मदेवतायै नमः ।

गुह्ये अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजाय नमः ।

पादयोर्देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तये नमः ।

सर्वाङ्गे शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकाय नमः ।

करसम्पूटे मम श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः ।।

इति ऋषयादिन्यासः ।।

atha nyāsaḥ |

Oṁ śirasi vedavyāsarṣaye namaḥ |

mukhe anuṣṭupchandase namaḥ |

hṛdi śrīkṛṣṇaparamātmadevatāyai houseḥ |

guhye amṛtāṃśūdbhavo bhānuriti bāyāya namaḥ |

pādayordevakīnandanaḥ ṣṭaktaye namaḥ ḥ

sarvāṅge śaṅkhabhṛnnandakī cakriti kīlakāya namaḥ |

karasampūṭe mama śrīkṛṣṇaprītyarthe jape viniyogāya namaḥ ||

iti ṛṣayādinyāsaḥ ||

fVIi.kh

d{kk & 5

fVIi.kh

vFk djU;kl% ।

Åa fo'o fo".kqo"kV~dkj bR;³xq"BkH;ka ue% A

ver`ka'kwn~Hkoks Hkkuqfjfr rtZuhH;ka ue% A

cã.;ks cãÑn~cãsfr e/;ekH;ka ue% A

lqo.kZfcUnqj{kksH; bR;ukfedkH;ka ue% A

fufe"kks·fufe"k% lXohfr dfuf"BdkH;ka ue% A

jFkk³xikf.kj{kksH; bfr djrydji`"BkH;ka ue% A

bfr djU;kl% A

atha karanyāsaḥ।

Oṁ viśvaṃ viṣṇurvaṣaṭkar ityaṅguṣṭhābhyāṃ namaḥ।

amṛtāṃśūdbhavo bhānuriti taranyībhyāṃ namaḥ।

brahmaṇyo brahmakṛdbrahmeti madhyamaabhyāṃ namaḥ।

suvarṇabindurakṣobhya ityanāmikābhyāṃ namaḥ।

nameṣo'nimiṣaḥ sragviti kaniṣṭhikābhyāṃ namaḥ।

rathāṅgapāṇirakṣobhya iti karatalakarapṛṣṭhābhyāṃ namaḥ।

iti karanyāsaḥ।

vFk "kM³xU;kl% ।

ऊँ विश्वं विष्णुर्वषट्कार इति हृदयाय नमः ।

अमृतांशूद्भवो भानुरिति शिरसे स्वाहा ।

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मेति शिखायै वषट् ।

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्य इति कवचाय हुम् ।

निमिषोऽनिमिषः स्रग्वीति नेत्रत्रयाय वौषट् ।

रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इत्यस्त्राय फट् । इति षडङ्गन्यासः ।।

श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे विष्णोर्दिव्यसहस्रनामजपमहं करिष्ये इति सङ्कल्पः ।

atha ṣaḍaṅganyāsaḥ।

Oṁ viśvaṃ viṣṇurvaṣaṭkarrai iti hṛdayāya namaḥ।

amṛāṃśūdbhavo bhānuriti śirase svāhā।

brahmaṇyo brahmakṛdbrahmeti śikhāyai vaṣaṭ।

suvarṇabindurakṣobhya iti kavacāya hum।

nameṣo'nimiṣaḥ sragviti netratrayāya vauṣaṭ।

rathāṅgapāṇirakṣobhya ityastrāya phaṭ।

iti ṣaḍaṅganyāsaḥ।।

śrīkṛṣṇaprītyarthe viṣṇordivyasahasranāmajapamahaṃ

curry iti

d{kk & 5

fVIi.kh

vFk /;kue~ A

क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकतेर्मौक्तिकानां

मालाकघ्प्तासनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः ।

शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितैर्मुक्तपीयूष वर्षैः

आनन्दी नः पुनीयादरिनलिनगदा शङ्खपाणिर्मुकुन्दः ।। १।।

atha dhyānam।

kṣīrodanvat pradeśe śucimaṇi vilasatsaikate mauktikānāṃ

mālāklraptāsanasthaḥ sphaṭikamaṇi nibhair mauktikair maṇḍitāṅgaḥ

śubhrair-abhrair upari viracitaiḥ mukti pīyūṣa varṣaiḥ

ānandī naḥ punīyādarinalinagadā śaṅkhapāṇirmukundaḥ ॥ 1 ॥

अर्थ – भक्तोंको मोक्ष प्रदान करनेवाले उन शेषशायी विष्णुको नमन कर उन्हें हमें पवित्र करने हेतु प्रार्थना करते हैं जो क्षीरसागरमें जहां चमकते हुए स्फटिक मणियोंके मध्य मोतियोंकी मालासे सुशोभित सिंहासनपर आरूढ हैं, जो श्वेत मेघरूपी छत्रसे आच्छादित हैं और वे मेघ ऐसे अमृत रूपी ओसके बूंदका वर्षाव करते हैं जैसे वे पुष्पकी पंखुरियां हों, उन्हें नमन है जिनका शरीर हीरे मोतियोंसे सुशोभित हैं और जिन्होंने हाथमें शंख धारण किया हुआ है।

Hkw% iknkS ;L; ukfHkfoZ;nlqjfuy'pUæ lw;ksZ p us=s

d.kkZokf'kk% f'kjks |kSeqZ[kefi nguks ;L; okLrs;efC/k% A

vUr%LFka ;L; fo'oa lqjuj[kxxkHkksfxxU/koZnSR;S%

fp=a jaje;rs ra f=Hkqou oiq"ka fo".kqeh'ka uekfe AA „AA

bhūḥ pādau yasya nābhirviyadasuranilaścandra sūryau ca netre

karṇāvāśāḥ shiro dyaurmukhamapi dahano yasya vāsteyamabdhiḥ|

antaḥsthaṃ yasya viśvaṃ suranarakhagagobhogigandharvadaityaiḥ

citraṃ raṃramyate ta tribhuvana vapuṣaṃ viṣṇumīśaṃ namami|| 2||

अर्थ – भगवान विष्णुके सर्वव्यापी स्वरूपको नमन है जिनका देह त्रिभुवन है , जिनके चरण यह पृथ्वी है , जिनकी नाभि गगन है, जिनकी सांसें वायु है, सूर्य और चन्द्रम जिनके नेत्र हैं, दिशाएं उनके कर्ण हैं , स्वर्ग उनका सिर है , अग्नि उनका मुख है और सागर उनका उदर(पेट) है । उनके इस सुन्दर स्वरूपमें ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्डके भिन्न देवता, मानव, पशु, पक्षी, गंधर्व एवं दैत्य विद्यमान हैं ।

Å 'kkUrkdkja Hkqtx'k;u ineukHk lqj'ka

fo'ok/kkja xxuln–'k e?ko.k 'kqHkk³xe A

y{ehdkUra deyu;u ;ksfxfHk/;kuxE;a

oUns fo".kq HkoHk;gja loZyksdSdukFke AA ...AA

Oṁ śāntālāraṃ bhujagaśayanaṃ padmanābhaṃ sureśaṃ

viśvādhāraṃ gaganasadṛśaṃ havavarṇaṃ śubhāṅgam|

lakṣmīkāntaṃ kamalanayanaṃ yogibhirdhyānagamyaṃ

vande viṣṇuṃ bhavabhayaharaṃ sarvalokaikanātham|| 3||

अर्थ – जिनकी आकृति अतिशय शांत है, जो शेषनाग की शैया पर शयन किए हुए हैं, जिनकी नाभि में कमल है, जो घ्देवताओं के भी

ईश्वर और संपूर्ण जगत के आधार हैं, जो आकाश के सदृश सर्वत्र व्याप्त हैं, नीलमेघ के समान जिनका वर्ण है, अतिशय सुंदर जिनके संपूर्ण अंग हैं, जो योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किए जाते हैं, जो संपूर्ण लोकों के स्वामी हैं, जो जन्म–मरण रूप भय का नाश करने वाले हैं, ऐसे लक्ष्मीपति, कमलनेत्र भगवान श्रीविष्णु को मैं प्रणाम करता हूँ।

e?k';ke ihrdk'k;okl

JhoRlk³d dkLrHkknHkkflrk³xe A

i.;kir i.Mjhdk;rk{k

fo".k oUn loykddukFke AA †AA

meghaśyāmaṃ pitakauśeyavasaṃ

śrīvatsāṅkaṃ kaustubhodbhāsitāṅgam।

puṇyopetaṃ puṇḍarīkāyatākṣaṃ

viṣṇuṃ oath sarvalokaikanātham॥ 4॥

अर्थ – मैं सभी लोकों के एकमात्र स्वामी भगवान् विष्णुकी वन्दना करता हूँ, जो मेघकी तरह श्याम वर्ण वाले हैं, पीले रेशमी वस्त्र पहने हुए हैं । उनका वक्षःस्थल श्रीवत्ससे चिह्नित है तथा कौस्तुभमणिकी प्रभासे सारे अङ्ग देदीप्यमान हैं । वे पुण्यस्वरूप हैं और उनके नेत्र कमल की तरह विशाल हैं ।। 4 ।।

fVIi.kh

ue% leLrHkrkukekfnHkrk; HkHkr A
vud:i:ik; fo".ko çHkfo".ko AA ‡AA

namaḥ samastabhūtānāmādibhūtāya bhūbhṛte।

anekarūparūpāya viṣṇave prabhaviṣṇave॥ 5॥

अर्थ – जिनके स्मरण करने मात्र से मनुष्य जन्म मृत्यु रूप संसार बंधान से मुक्त हो जाता हैं , सबकी उत्त्पति के कारण भूत उन भगवान् विष्णु को नमस्कार हैं । सम्पूर्ण प्राणियों के आदिभूत , पृथ्वी को धारण करनेवाले, अनेक रूपधारी और सर्वसमर्थ भगवान विष्णु को प्रणाम है।

l'k³[kpØ lfdjhVd.My
lihroL= ljlh#g{k.ke A
lgkjo{kLFkydkLrHkfJ;
uekfe fo".k f'kjlk prHkte AA ˆAA

saśaṅkha-cakraṃ sakirīṭa-kuṇḍalaṃ

sapīta-vastraṃ sarasīruhekṣaṇam |

sahāra-vakṣaḥ-sthala kaustubha-śriyaṃ

namāmi viṣṇuṃ śirasā catur-bhujam ॥ 6॥

अर्थ – जिनके हाथों में शंक और चक्र है, जिनके सिर पर मुकुट विराजमान है और कानों में कुंडल पहने है। जो कमाल नयन है और पीले वस्त्रों से सुशोभित है। जिनके वक्ष पर कौस्तुभ मणि युक्त लगी फूलों की माला है, ऐसे चार भुजाधारी विष्णु को मैं नमसकर करता हूँ ।

छायायां पारिजातस्य हेमसिंहासनोपरि

आसीनमम्बुदश्याममायताक्षमलंकृतम् ।

चन्द्राननं चतुर्बाहुं श्रीवत्साङ्कित वक्षसं

रुक्मिणी सत्यभामाभ्यां सहितं कृष्णमाश्रये ।। ७।।

chāyāyāṃ pārijātiya hemasiṃhāsanopari

asinamambudaśyāmamaayatākṣamalaṃkṛtam।

candrānanaṃ caturbāhuṃ śrīvatsāṅkita vakṣasaṃ

rukmiṇī satyabhāmābhyāṃ sahitaṃ kṛṣṇāmaśraye॥ 7॥

अर्थ – मैं भगवान कृष्ण को नमस्कार करता हूं और समर्पण करता हूं, जिनका रंग आसमान की तरह नीला है, चौड़ी आंखें और चार भुजाएं हैं, जो अच्छी तरह से सुशोभित हैं, जिनके चेहरे पर चंद्रमा की तरह चमक है, जिनकी छाती पर श्रीवत्स का निशान है, जो एक सुनहरे सिंहासन पर अपरिजात पेड़ की छाया में अपनी पत्नी और सत्यभामा के साथ बैठे हैं।

ikBxr i'u& 13-1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. भूः पादौ यस्य .... सूर्यौ च नेत्रे
2. चित्रं .... तं त्रिभुवन वपुषं विष्णुमीशं नमामि ।।
3. विश्वाधारं .... मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
4. सशङ्खचक्रं ....सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
5. छायायां पारिजातस्य ....आसीनमम्बुदश्याममायताक्षमलंकृतम् ।

vkiu D;k lh[kk\

- पाठ में दिए गये श्लोकों का बिना पुस्तक की सहायता के उच्चारण करना ।
- विष्णु की प्रशांसा में श्लोकों का अर्थज्ञान।

ikBkr i'u

1. विष्णु के कुछ नाम बताते हुए अर्थ भी लिखिए।

d{kk & 5

fVIi.kh

mÙkjekyk

13.1

(1)

1. नाभिर्वियदसुरनिलश्चन्द्र
2. रंरम्यते
3. गगनसदृशं
4. सकिरीटकुण्डलं
5. हेमसिंहासनोपरि